नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

एकः सूते सकलम्

दिसंबर, 2008 वर्ष 13, अंक 12 मूल्य : एक प्रति 0.50 रु. वार्षिक 5.00

32वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला : उत्साह भरा दृश्य

बिहार सरकार के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित 32वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का शुभारंभ 8 नवम्बर 2008 को बिहार की राजधानी पटना में हुआ। स्थानीय गांधी मैदान में मेले का उद्घाटन करते हुए बिहार के मुख्य मंत्री श्री नीतिश कुमार ने कहा कि बिहार में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। देश के विभिन्न संस्थानों एवं विभिन्न रोजगारों में उसने अपना परचम लहराया है। यहां के लोग पढ़ने के शौकीन हैं और यही कारण है कि अखबार, पत्रिका एवं पुस्तकों की सर्वाधिक बिक्री यहां हो रही है। श्री कुमार ने पुस्तक मेले के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार और स्थानीय जिला प्रशासन हर संभव मदद करेगा। उन्होंने आग्रह किया कि नेशनल बुक ट्रस्ट ने तीन बार राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन कर यहां का वातावरण देख लिया है, उन्हें यहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक मेले के आयोजन पर विचार करना चाहिए। श्री कुमार ने कहा कि राज्य में नई पुस्तकालय नीति बन गई है, जिससे राज्य के विभिन्न गांवों में मृतप्राय पुस्तकालय पुनर्जीवित हो सकेंगे।

मुख्य मंत्री का मेला परिसर में आगमन, अगुवाई में ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन

इस अवसर पर प्रदेश के मानव संसाधन विकास मंत्री श्री हरि नारायण सिंह ने कहा कि यह महज संयोग है कि सरकार द्वारा आयोजित दो दिवसीय शिक्षा दिवस के मौके पर ही इस मेले का आयोजन हुआ है। दो दिनों बाद पूरे प्रदेश के छात्र और शिक्षक, शिक्षा दिवस के कार्यक्रम में शिरकत करने पटना आ रहे हैं। उन्होंने आशा जताई कि सरकार के निर्देशानुसार स्कूलों द्वारा इस मेले में अधिक से अधिक पुस्तकों की खरीद की जाएगी। छात्र भी पुस्तकों के इस विशाल भंडार में अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकों की खरीद सकेंगे।

मुख्य मंत्री को पुस्तकों का उपहार सौंपती ट्रस्ट की निदेशक

इससे पूर्व आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने कहा कि बिहार बौद्धिक रूप से समृद्ध राज्य रहा है। यहां का पुस्तक प्रेम, प्रदेश की सांस्कृतिक और बौद्धिक संपन्नता का परिचायक है। यहां की जमीन बौद्धिक रूप से उर्वर है, ज्ञान के क्षेत्र में इस प्रदेश की एक अलग पहचान रही है। मेले में राज्य सरकार के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने ट्रस्ट के कार्यों एवं गतिविधियों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि इस मेले में देश भर के एक सौ पचास प्रकाशक, एक सौ पचहत्तर स्टॉलों पर पाठकों के लिए पुस्तकें उपलब्ध करवा रहे हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्री का स्वागत करती ट्रस्ट की निदेशक

मानव संसाधन विकास विभाग के मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिन्हा ने मेले के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे प्रदेश के छात्रों को लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश के विद्यालयों एवं शिक्षा समितियों को यह निर्देश दिया गया है कि अधिक से अधिक पुस्तकों की खरीद इस मेले में करें।

उद्घाटन समारोह में आगत अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने पुस्तकों का उपहार देकर किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमाल अहमद ने किया।

मेले के पहले ही दिन से बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमियों ने विभिन्न स्टॉलों पर पुस्तकों का अवलोकन और खरीदारी शुरू कर दी।

8 नवंबर 2008 से ही मेले में साहित्यिक कार्यक्रमों का सिलसिला बना रहा। पहले दिन **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम के अंतर्गत बांग्ला के प्रख्यात उपन्यासकार **डॉ. नजरुल इस्लाम** मेला सभागार में पुस्तक प्रेमियों से रू-ब-रू हुए। संध्या काल आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमी उपस्थित होकर डॉ. इस्लाम की रचना-यात्रा से अवगत हुए। डॉ. इस्लाम ने पुस्तक प्रेमियों की जिज्ञासाओं को शांत करने का हर संभव प्रयास किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने डॉ. इस्लाम का स्वागत करते हुए कहा कि अपने अनुभवों और विचारों को सामने लाने के लिए ही लेखन कार्य किया जाता है। लेखक और पाठक के बीच संवाद होने से ही लेखन कार्य की सार्थकता प्रमाणित होती है।

पाठकों से बातचीत करते हुए डॉ. नजरुल इस्लाम एवं श्रीमती नुज़्हत हसन

इस अवसर पर डॉ. नजरुल इस्लाम ने अपने प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लेखन कार्य केवल मेरा शौक नहीं, मैं अपने अनुभवों के आधार पर समाज और मानव की भलाई के लिए लेखन में सक्रिय हूं। उन्होंने कहा कि मैं अपनी आरक्षी सेवा में अभी तक तो इमानदार हूं, पर इसका अफसोस है कि मैं पुलिस को अब तक इमानदार नहीं बना सका। डॉ. इस्लाम ने कहा कि जब तक पूरी प्रशासनिक व्यवस्था, स्वच्छता,

निरपेक्षता और ईमानदारी से काम नहीं करेगी तब तक व्यवस्था में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता और यह तभी संभव है, जब हम जिनके अधीन काम कर रहे हैं उनमें ये सभी गुण आ जाएं। उन्होंने पुस्तक प्रेमियों का आह्वान किया कि अपने गांव, समाज, और मातृभूमि के लिए ईमानदारी से कुछ कार्य अवश्य करें, जिससे मातृऋण, पितृऋण की तरह देश के ऋण से वे उऋण हो सकें। लेखक-पाठक संवाद के बीच मेला परिसर में एक नया वातावरण बना।

9 नवंबर 2008 को बिहार के पुस्तक प्रेमियों ने रविवार की छुट्टी का जमकर उपयोग किया। खिलखिलाती धूप के बीच मेला शुरू होते ही बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं के साथ युवा एवं बुजुर्गों का आना शुरू हो गया, दिन ढलते ही मेले में प्रवेश हेतु पुस्तक प्रेमियों को कतार में लगना पड़ा। विभिन्न प्रकाशनों के स्टालों पर पुस्तक प्रेमियों ने अच्छी खासी खरीदारी की।

अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रम में श्री अरुण कमल

अक्षरों की इस दुनिया में कालजयी और उत्कृष्ट साहित्यों पर पाठकों की बारीक नजर थी। महान हस्तियों की जीवनी, आत्मकथा, कविता संग्रह, कहानी संग्रह सहित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषयों पर उपलब्ध पुस्तकें पाठकों को आकृष्ट करती रहीं, खरीदने को विवश करती रहीं। प्रतियोगिता परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों के स्टालों पर प्रतियोगी छात्रों की भीड़ देखते बनती थी। इन सबके बीच **संवेदी पुलिस और संवेदी समाज** का नारा बुलंद करती हरियाणा पुलिस अकादमी का स्टाल पुस्तक प्रेमियों को विशेष रूप से अपनी ओर खींच रहा था। पुस्तक प्रेमी भी बड़ी तन्मयता से अकादमी द्वारा पुलिस और जनता के बीच सहयोग एवं सद्भाव स्थापित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी ले रहे थे।

अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रम में दूसरे दिन हिन्दी के चर्चित कवि, चिंतक श्री अरुण कमल पाठकों से रू-ब-रू हुए। इस मौके पर पाठकों से बातचीत में उन्होंने कहा कि युवाओं ने इस देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, समय फिर आ गया है कि वे नया भारत बनाने के लिए आगे आएं। उन्होंने कहा कि साहित्य रचना एक सतत प्रक्रिया है जो चौबीस घंटे चलता रहता है। किताबें खरीदना और पढ़ना एक शौक होता है। सचाई है कि पुस्तकें महंगी हो गई हैं, तथापि इसे मिलजुल कर खरीद कर पढ़ा जा सकता है। उन्होंने त्रिभाषा फार्मूला पर जोर देते हुए कहा कि हमें हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाएं भी सीखनी चाहिए। वैसे भी हिन्दी के एक सफल साहित्यकार बनने के लिए हमें संस्कृत, उर्दू, और अंग्रेजी पर पकड़ तो बनानी ही होगी। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे आगे आएं और आजादी के दौरान शहीद युवाओं के सपनों का भारत बनाएं। श्री कमल ने साहित्य से इत्तर भी कई मसलों पर पाठकों की जिज्ञासाओं का शमन किया।

मेले में क्रेताओं की उमड़ती भीड़

तीसरे दिन **10 नवंबर 2008** को पुस्तक प्रेमियों को हिन्दी, उर्दू और मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकारों से रू-ब-रू होने का अवसर मिला। मेला सभागार में आयोजित **भारतीय कथा लेखन का समकालीन परिदृश्य** विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में श्री अवधेश प्रीत, प्रो. सुरेन्द्र स्निग्ध, प्रो. हुसैनुल हक और प्रो. अब्दुस्समद और श्री मोहन भारद्वाज के सारगर्भित विचार सुने गए।

संगोष्ठी में वक्तव्य देते हुए श्री अवधेश प्रीत

श्री अवधेश प्रीत ने कहा कि वर्तमान समय में चार पीढ़ियों के लेखकों की लेखनी को समकालीन लेखन कहा जा सकता है। उन्होंने समकालीन लेखन को स्पष्ट करते हुए कहा कि हम जिस समय को जी रहे हैं। जो रच रहे हैं उसका परिदृश्य अनिश्चित लग रहा है। किस यथार्थ को वर्तमान या किसको भविष्य कहें--संभव नहीं दिखा रहा। उन्होंने कहा कि समकालीन कथा लेखन का केंद्र दलित और स्त्री विमर्श का होना चाहिए। हमें वर्तमान परिदृश्य पर अधिक से अधिक सोचने, संवाद करने और लिखने की आवश्यकता है और वर्तमान लेखन इस दिशा में सक्रिय भी है। समकालीन कथा लेखन से हम वर्तमान स्थितियों से अवगत हो रहे हैं। उन्होंने वर्तमान लेखन में शिल्प के बढ़ते जोड़ पर आपत्ति जताई और कथ्य को केंद्र बनाने की आवश्यकता पर बल दिया, क्योंकि कथ्य के बिना समाज की पीड़ा और संवेदनाओं को व्यक्त नहीं किया जा सकता। श्री प्रीत ने कहा कि गांव का यथार्थ वर्तमान समय में लेखन से गायब हो रहा है। उन्होंने बिहार के साहित्यकारों की चर्चा करते हुए कहा कि बिहार के साहित्यकार समस्याओं और संघर्ष को जिस तरह अपनी लेखनी से आगे ला रहे हैं, उससे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी पहचान बनी है।

बाएं से—प्रो. अब्दुस्समद, प्रो. हुसैनुल हक, श्री मोहन भारद्वाज, प्रो. सुरेन्द्र स्निग्ध, श्री अवधेश प्रीत

इस अवसर पर उर्दू के साहित्यकार प्रो. हुसैनुल हक ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि जो जिंदा है वह समकालीन है, और मर गया वह अतीत है। हिन्दी और उर्दू का साहित्यिक दृश्य कुछ समय पहले तक एक था। उन्होंने समकालीन लेखन की चर्चा करते हुए कहा कि वर्तमान समय में जो लेखन हो रहा है उसमें बदलाव लाकर ऐसा लेखन होना चाहिए कि लोग वर्तमान परिदृश्य की बुराइयों से घृणा करें। उन्होंने कहा कि आम आदमी और कथाकार दोनों का जिंदा रहना जरूरी है और कथ्य और शिल्प--दोनों ही कहानी की आवश्यकता है।

मैथिली के प्रख्यात आलोचक श्री मोहन भारद्वाज ने मैथिली भाषा में लिखी गई कुछ कहानियों के माध्यम से **भारतीय लेखन के समकालीन परिदृश्य** में मैथिली साहित्य के प्रयासों को लोगों के सामने रखा। उन्होंने कहा कि अब तक मैथिली साहित्य में जातिवाद जैसे विषयों पर ही लेखनी चलती थी, लेकिन बदलते परिवेश में वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए देश और प्रदेश तथा अपने क्षेत्र की समस्याओं और संवेदनाओं को मैथिली लेखक अपनी लेखनी के माध्यम से आगे ला रहे हैं। मैथिली साहित्य का परिवेश बढ़ा है। भले ही मैथिली कथा की भाषा और वातावरण मिथिला और मैथिली के इर्द-गिर्द घूमता हो पर उनके विचार और इसमें उठाए गए मुद्दे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हो रहे हैं।

मेले में पाठकों की भीड़

प्रो. सुरेन्द्र स्निग्ध ने कहा कि वर्तमान दौर में लिखने वाले सभी लोग समकालीन नहीं हो सकते हैं। आज की सभी कहानियां भी समकालीन नहीं हैं। जब किसी कहानी में वर्तमान का यथार्थ और चेतना में अंतर्द्वंद हो तभी वह समकालीन लेखन हो सकता है। यथार्थ की गतिशीलता के बिना कोई लेखन रचना नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि अधिकांश नए लेखकों में गुजरात के दंगे और कोसी की विभीषिका जैसी स्थिति पर उत्पन्न होने वाली संवेदना गायब दिख रही है। प्रो. स्निग्ध ने कहा कि यथार्थ का धरातल बदल रहा है, जिसे समेटना कठिन है। उन्होंने कहा कि यथार्थ की परतों को पहचान कर नई परत की ओर जाना होगा, तभी कोसी के दर्द को कमरे से बाहर आकर

समझा जा सकेगा। क्योंकि कोसी की विभीषिका का दर्द बंद कमरे में बैठकर नहीं महसूस किया जा सकता है।

प्रो. अब्दुस्समद ने कहा कि हिन्दी में कुछ ऐसी कहानियां आई हैं, जिस पर उर्दू की नजर नहीं गई है। कुछ ऐसे मसले भी हैं, जिन पर न तो उर्दू में लेखनी चली है, न ही हिन्दी में है। उन्होंने कहा कि लेखक समाज का ही प्राणी होता है, अभिव्यक्ति के उसके तरीके केवल अलग हैं। दुनिया को बदलने में लेखकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज से कटकर कोई रचना नहीं की जा सकती। इसलिए लेखन ऐसा हो जिसे समाज के निचले पायदान पर बैठा मानव भी समझ सके। संतोष की बात है कि **भारतीय कथा लेखन का वर्तमान परिदृश्य** हमें उस ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है।

मैथिली, हिन्दी और उर्दू के इन चर्चित और मूर्धन्य साहित्यकारों ने **भारतीय कथा लेखन के वर्तमान परिदृश्य** की स्थितियों पर पुस्तक प्रेमी और साहित्यकारों के प्रश्नों का संतोषप्रद जवाब देकर उनकी जिज्ञासा शांत की।

पाठकों से बातचीत करते हुए
श्री जुबैर रिज़्वी

अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रम में संध्या काल श्री जुबैर रिज़्वी एवं प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने आम पाठकों से बातचीत की। श्री रिज़्वी ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य पढ़ने के लिए पाठकों में एक खास किस्म का शौक होना चाहिए। किताबें पाठक से चाहती हैं कि वे उन्हें जीवंत ढंग से पढ़ें। उन्होंने कहा कि आज हमारा साहित्य अंग्रेजी की ओर उन्मुख है फिर भी हिन्दी और उर्दू जुबान की महत्ता कम नहीं हुई है। श्री रिज़्वी ने भारतीय संस्कृति को विश्व की सबसे समृद्ध संस्कृति की संज्ञा देते हुए कहा कि जो हमारी भारतीय संस्कृति है वह कहीं और नहीं मिलती। इस अवसर पर प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि पुस्तकें जिंदगी की जरूरी चीजों में से एक हैं। वर्तमान समय में घट रही घटनाओं की सचाई हमें टी.वी. और समाचार-पत्रों के माध्यम से अवश्य मिलती है पर साहित्य में उसकी आवश्यकता हमेशा बनी रहती है। उन्होंने कहा कि हिन्दी एक संस्कृति है और संस्कृति इतनी जल्दी समाप्त नहीं हो सकती। हिन्दी किसी आक्रमण के माध्यम से नहीं बनी है, अपने महत्त्व और क्षमता के बल पर लोगों के दिलों में हिन्दी ने अपनी जगह बनाई है।

पाठकों से बातचीत करते हुए
प्रो. गंगा प्रसाद विमल

चौथे दिन **11 नवंबर 2008** को भी मेले में महान हस्तियों की जीवनी, उनसे जुड़े प्रेरक प्रसंग निबंध, संग्रह, कविता संग्रह, उपन्यास, कहानी संग्रह आदि की खरीदारी होती रही। हरिवंश राय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तकों की मांग सर्वाधिक मांग थी। वर्तमान समस्याओं और चुनौतियों पर केंद्रित पुस्तकें भी लोगों को अपनी ओर खींच रही थी। महिला लेखकों के साहित्य की मांग दो दिनों बाद बढ़ी। नासिरा शर्मा, पद्मा सचदेव, महादेवी वर्मा, महाश्वेता देवी, आशापूर्णा देवी आदि की किताबें पाठकों को खूब भाई। एक तरफ साहित्य प्रेमी साहित्यिक कृतियों में तल्लीन थे, दूसरी तरफ बाल साहित्य और प्रारंभिक स्तर पर पढ़ाई के लिए सी डी और कैसेट की धूम थी। वहीं प्रतियोगी छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तकों की पूरी शृंखला उपस्थित थी।

पुस्तकों की दुनिया में खोए हुए पाठक

सायं काल तेलुगु कवि वरवर राव ने **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम के अंतर्गत पुस्तक प्रेमियों के बीच संवाद करते हुए कहा कि पाटलिपुत्र और तेलंगाना का पुराना संबंध रहा है। महात्मा बुद्ध से लेकर राहुल सांस्कृत्यायन तक की एक परंपरा यहां रही है। उन्होंने कहा कि कवि वही है जो सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध लिखे। सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध लिखा गया साहित्य ही जीवंत साहित्य है। आज अच्छाई और बुराई बताने की जिम्मेवारी साहित्यकारों पर है। उन्हें उन बेजुबानों मेहनतकशों की जुबान बननी चाहिए जिनकी आवाज अब तक नहीं सुनी गई है। देश की वर्तमान स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सांप्रदायिकता और फासीवाद के विरोध में लेखकों को अपनी कलम चलानी चाहिए।

श्री राव ने कहा कि वर्तमान स्थिति आजादी के समय वाली है, जिस तरह उस समय लेखकों ने अपनी कलम से जनता को जाग्रत किया, उसी प्रकार अब लेखकों को आगे आना चाहिए। उन्होंने लेखन के क्षेत्र में बढ़ते बाजारवाद की प्रवृत्ति पर चिंता जताई। उनका मानना था कि कोई कवि या लेखक समाज को नहीं बदल सकता। समाज को जनता की सेना बदल सकती है और जनता के संघर्ष में कवि और लेखक जनता के सिपाही हैं। उन्होंने कहा कि किताबें परिवर्तन लाती हैं। एक किताब मनुष्य के जीवन और सामाजिक व्यवस्था को बदल सकती है। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और विश्व में हो रहे व्यवस्था-परिवर्तन पर भी उन्होंने बेबाक टिप्पणी दी। उन्होंने कहा कि भले ही ओबामा जैसे लोगों के हाथों में अमेरिका की बागडोर हो पर वह वहां की साम्राज्यवादी व्यवस्था को नहीं बदल सकते हैं।

वक्तव्य देते हुए श्री वरवर राव

इससे पूर्व पुस्तक प्रेमियों से श्री बरबर राव का परिचय कराते हुए प्रो. रविभूषण ने कहा कि श्री राव पूरे भारत वर्ष के कवि हैं उन्होंने भाषा, प्रांत, और क्षेत्र के दायरे को तोड़कर अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई है। उनके जैसा कोई भी क्रांतिकारी कवि अभी पूरे देश में नहीं है।

12 नवंबर 2008 के पांचवें दिन के आयोजन में हिन्दी के प्रख्यात आलोचक प्रो. मैनेजर पाण्डेय ने **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम में कहा कि साहित्य, समाज में सीधा बदलाव नहीं ला सकता। वह पहले पढ़ने वाले को चेतनावान बनाता है और फिर वही चेतन मनुष्य समाज में बदलाव लाता है। साहित्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। प्रो. पाण्डेय ने कहा कि वे पाठकों के लिए लिखते हैं। सच्चा साहित्य वही है जो सवाल खड़ा करे। अब समय आ गया है कि हम कान सक्रिय करने के बजाए जुबान सक्रिय करें। संवाद के बजाए संघर्ष की संस्कृति विकसित की जाए। उन्होंने कहा कि हिन्दी के क्षेत्र में अवसर घटा है। अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण हिन्दी ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं पर खतरा बढ़ता जा रहा है। पर जब तक हिन्दी पूरे देश की भाषा नहीं बनेगी, देश में सच्चा लोकतंत्र नहीं आ सकता। उन्होंने कहा कि साहित्य मनुष्य को संवेदनशील बनाता है और दूसरे के बारे में सोचने के लिए विवश करता है। प्रो. पाण्डेय ने कहा कि शतरंजी साहित्य की चिंता छोड़कर सामाजिक चिंतन और सरोकार से जुड़े साहित्य पर ध्यान दें। तकनीकी शिक्षा और अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व पर पाठकों की चिंता दूर करते हुए उन्होंने कहा कि इस परिस्थिति से घबराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वर्तमान में जो शिक्षा का दौर चल रहा है, वह सिर्फ कैरियर बनाने की चिंता को जन्म दे रहा है, जब कि साहित्य दूसरों के प्रति हमदर्दी पैदा करने का काम करता है, जिससे समाज और राष्ट्र को सुरक्षित किया जा सकता है। दलित एवं स्त्री विमर्श पर चल रही साहित्यिक रचना की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इससे इत्तर भी हिन्दी में साहित्यिक रचनाएं तेजी से हो रही हैं।

वक्तव्य देते हुए प्रो. मैनेजर पाण्डेय

पाठकों से संवाद करते हुए मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार पं. गोविन्द झा ने कहा कि अपनी रचनाओं के माध्यम से युग के साथ चलने का प्रयास मैंने किया, पर दौड़ नहीं पाया। इस क्रम में समाज में व्याप्त सभी समस्याओं के एक-एक लक्षण को पकड़ने की कोशिश की, कितना सफल हुआ इसका आकलन पाठक ही कर सकते हैं। उन्होंने मैथिली साहित्य की चर्चा करते हुए कहा कि मैथिली में काफी कुछ वर्तमान समस्याओं पर लिखा गया है, पर तात्कालिक समस्याओं पर त्वरित टिप्पणी मैथिली साहित्य में

काफी कम है, उसमें ताजापन का अभाव है। उन्होंने कहा कि हम भाषा की तह में जितने गहरे जाएंगे, उनकी आपसी निकटता और एकरूपता उतनी ही गहरी नजर आएगी है।

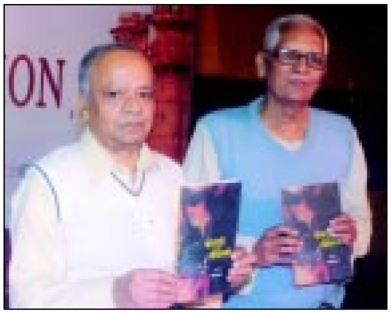

भोजपुरी लोककथा पुस्तक का लोकार्पण करते हुए प्रो. मैनेजर पाण्डेय एवं पं. गोविन्द झा

इस अवसर पर प्रो. पाण्डेय ने ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित मिथिलेश्वर की पुनर्रचित पुस्तक **भोजपुरी लोककथा** और चतुरंग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रदीप बिहारी की मैथिली कहानियों के हिन्दी अनुवाद का संग्रह **उजास** का लोकार्पण भी किया।

12 नवंबर 2008 को पुस्तक प्रेमियों की भीड़ विभिन्न स्टॉलों में लगी रही। प्रदेश के सजग पाठक पुस्तकों का अवलोकन करने के साथ-साथ **समकालीन भारतीय कविता का सामाजिक सरोकार** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी सक्रिय रहे। प्रमुख वक्ता श्री प्रेम कुमार मणि, श्री कर्मेन्दु शिशिर, प्रो. वहाव अशरफी तथा डॉ. रमानन्द रमण ने अपने विचार रखे और पुस्तक प्रेमियों से संवाद किया।

श्री कर्मेन्दु शिशिर ने कहा कि आजादी के बाद हिन्दी साहित्य का केंद्र कविता ही रहा है। भारतीय कविता में अस्सी के दशक के बाद गहरे सामाजिक सरोकार दिखाई पड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्यकार को अपनी जिंदगी लगानी होती है, तभी वे सामाजिक सरोकार से संबंधित कविता की रचना कर पाते हैं। वर्तमान समय में कविता का वैचारिक पक्ष और सामाजिक प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण हो गई है। जो रचना भाव के द्वारा चेतना को उद्धत कर खास तरह की संवेदना उत्पन्न करे वही कविता कही जा सकती है। उन्होंने कहा कि हिन्दी कविता का सामाजिक सरोकार इससे स्पष्ट होता है कि आज जिस दलित और स्त्री विमर्श की चर्चा हो रही है, हिन्दी कविता ने वर्षों पूर्व इस पर अपनी पीड़ा स्पष्ट कर दी थी। समाज के विषय से अलग होकर बोलने, लिखने वालों की बात का संज्ञान कोई नहीं लेगा।

कविता पर बात करते हुए श्री कर्मेन्दु शिशिर

मैथिली के आलोचक रमानन्द रमण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मैथिली कविता के समकालीन सामाजिक सरोकार की चर्चा की। देश और समाज की हर परिस्थिति पर मैथिली कविता अन्य भारतीय भाषाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। सांप्रदायिकता, संवेदनहीनता, निर्माण और विनाश सहित सभी मामलों पर मैथिली कविता की नजर गई है। समकालीन जागरूकता और समय की अपरिहार्यता के सभी पहलुओं को मैथिली कविताओं में देखा जा सकता है।

श्री प्रेमकुमार मणि ने कहा कि भक्तिकाल से ही हिन्दी कविता में सामाजिक सरोकार दिख रहा है। हमें इस बात की तलाश करनी चाहिए कि भारतीय कविता प्रजातांत्रिक मूल्य को स्वीकार करती है कि नहीं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कविता उन तबकों से आ रही है, जिनके पास पीड़ा नहीं है; और जिनके पास पीड़ा है, उस वर्ग में लेखक नहीं है। आज लेखन कार्य पुरस्कारों को ध्यान में रखकर हो रहा है। यदि समाज को ध्यान में रखकर कविताएं लिखी गईं तो सामाजिक सरोकार खुद-ब-खुद आ जाएगा।

बाएं से—श्री कर्मेन्दु शिशिर, श्री प्रेमकुमार मणि, प्रो. वहाव अशरफी, डॉ. रमानन्द रमण

प्रो. वहाव अशरफी ने कहा कि नौ रसों में साहित्य बंधा है, और इसी के इर्द-गिर्द सभी बंधे हैं। कविता से सामाजिक सरोकार समाप्त हो जाए तो वह समाज और संस्कृति से कट जाएगी। परिस्थिति भले ही बदलती हो, पर जज्बात वही रहते हैं। परिस्थितिवश जो कुछ लेखक महसूस करता है, उसे लिखता है, हर हाल में सामाजिक सरोकार से जुड़ा रहता है।

13 नवंबर 2008 को भी पुस्तक प्रेमियों के बीच पुस्तकों की भूख समाप्त होती नहीं दिखी। पाठकों की बड़ी संख्या मेले में विभिन्न स्टॉलों पर नजर आई। **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि-चिंतक श्री अशोक वाजपेयी को सुनने हेतु समय से पूर्व ही लोग जमा होने लगे।

श्री अशोक वाजपेयी को सुन रही भीड़

श्री अशोक वाजपेयी ने अपनी साहित्य-यात्रा की चर्चा की और पाठकों के प्रश्नों का जवाब दिया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भारत में मातृभाषा का व्यापक अवमूल्यन हो रहा है। अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण यह स्थिति पैदा हुई है, अंग्रेजी को मातृभाषाओं के माध्यम से काबू किया जा सकता है। उन्होंने बिहार की साहित्यिक परिस्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य के रसिक और पाठकों की बड़ी संख्या बिहार में है। यदि बिहार न होता तो हममें से कइयों को यह मालूम भी न होता कि हमारे लिखे को कोई पढ़ भी रहा है।

श्री वाजपेयी ने कहा कि कवि एक साथ तीन जीवन जीता है। उसके लिए बहुसभ्यता की परिस्थिति होती है, इसलिए भारतीय साहित्य एक-सा नहीं दिखता। उन्होंने कहा कि सच्चा लेखक वही है, जो अपने लिखे पर संदेह करे, और सही साहित्य भी वही है, जो अपने पर संदेह करे। साहित्य को यह भ्रम नहीं है कि वह जो कह रहा है, सच है। श्री वाजपेयी ने अपने संवाद में कहा कि बहुलता की परम्परा भारत में मौलिक है। भारत बहुभाषिक और बहुपारंपरिक एवं बहुधार्मिक देश है। बहुलता की परंपरा के कारण हमारी भाषा एवं अन्य गतिविधियों के बीच संवाद भी होता है और मुठभेड़ भी होता है, पर इस बहुपरम्परा से हम दूर हुए तो न्याय, समता और स्वतंत्रता से दूर हो जाएंगे। हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी, ज्ञान-विपन्न भाषा हो गई है। क्योंकि सांस्कृतिक विपन्नता के साथ-साथ, अपनी दूसरी भाषेतर सृजनात्मकता से हम अलग हो गए हैं। ज्ञान और रसिकता के क्षरण के बीच हिन्दी भाषा को सशक्त बनाने तथा संपन्न भाषा के रूप में इसे पुनर्स्थापित करने के लिए और अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। उन्होंने उग्र राष्ट्रीयता का विरोध करते हुए कहा कि हम छोटे सपने देखें और उसकी लौ जलाने का प्रयास करें। कार्यक्रम का समापन श्री वाजपेयी ने अपनी कविताओं के साथ किया।

संबोधन देते हुए श्री अशोक वाजपेयी

15 नवंबर 2008 आते-आते मेला समापन की ओर बढ़ रहा था, पर पुस्तक प्रेमियों की भीड़ लगातार पुस्तकों के अवलोकन एवं खरीद के लिए बढ़ती प्रतीत हुई। **अपने प्रिय लेखक से मिलिए** कार्यक्रम में सुविख्यात हिन्दी कवि प्रो. केदारनाथ सिंह एवं मैथिली के श्री कीर्ति नारायण मिश्र ने पाठकों के साथ संवाद किया। इस अवसर पर प्रो. केदारनाथ सिंह ने संवेद फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित श्री तारानन्द वियोगी की कविता पुस्तक का लोकार्पण भी किया।

पाठकों से रू-ब-रू प्रो. केदारनाथ सिंह और श्री कीर्तिनारायण मिश्र

श्री कीर्ति नारायण मिश्र ने अपनी साहित्यिक यात्रा का अनुभव बांटते हुए कहा कि आज लिखना, छपना और पाठकों

निदेशक की कलम से......

गत माह बिहार सरकार एवं जिला प्रशासन पटना के सहयोग से गांधी मैदान, पटना में 32वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। महात्मा बुद्ध, सम्राट अशोक, नीतिविद् चाणक्य, महावीर जैन, डा. राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण जैसे मनीषियों की धरती बिहार में पुस्तकों एवं पुस्तकधर्मी लोगों के प्रति स्नेह दिखा। पुस्तक मेले के प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों के विभिन्न अभिकरणों एवं पाठकों का समर्थन चकित करने लायक था। मेले के दौरान आयोजित संगोष्ठियों एवं अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रमों में लेखकों से बातचीत करने के लिए पहले से प्रतीक्षारत पुस्तक प्रेमियों की आतुरता सुखद लग रही थी। अपने उद्घाटन भाषण में बिहार के मुख्य मंत्री माननीय श्री नीतीश कुमार जी ने ट्रस्ट को अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला आयोजित करने का आमंत्रण दिया और बिहार सरकार की ओर से हर संभव सहयोग देने का वचन दिया। मेले के आखिरी दिन तक भागीदार प्रकाशक एवं पाठक ने.बु.ट्र. से पटना में प्रतिवर्ष पुस्तक मेले का आयोजन करने का आग्रह करते रहे। ट्रस्ट की ओर से मैं इन सभी आश्वासनों और स्नेह-प्रेम का सम्मान करती हूं।

गत माह ही आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, 14-20 नवंबर के दौरान राष्ट्रीय राजधानी एवं देश के विभिन्न भागों में पुस्तक संबंधी कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय भागीदारी रही है। नेहरू भवन, नई दिल्ली में तो संभवतः पहली बार सप्ताह भर का कथा वाचन उत्सव मनाया गया, जिसमें कई स्कूल और विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों ने भाग लिया। प्रत्येक दिन का उत्सव कथा वाचन के किसी खास विधा पर केंद्रित होता था, जिसमें प्रख्यात लेखक, चित्रकार और बुद्धिजीवी बच्चों के साथ संवाद करते थे। अन्य कार्यक्रम इस प्रकार रहेः दावण गेरे, कर्नाटक में छात्रों के लिए निबंध प्रतियोगिता और पुस्तक लोकार्पण समारोह; ढेंकनाल, ओड़िसा में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम; कोलकाता; प बंगाल; में पुस्तक लोकार्पण सह चर्चा; हुगली, प. बंगाल में नवसाक्षर कार्यशाला; सूरत, गुजरात में पुस्तक लोकार्पण एवं आज का बालक और बाल साहित्य विषय पर संगोष्ठी; गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में पुस्तक लोकार्पण एवं पठन रुचि की समस्याएं और समाधान विषय पर संगोष्ठी; छतरपुर, मध्य प्रदेश में वाद-विवाद प्रतियोगिता और पुस्तक लोकार्पण समारोह; राजमुंदरी, पूर्वी गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश में पुस्तक लोकार्पण सह चर्चा कार्यक्रम; दसूहा, पंजाब में पुस्तक लोकार्पण, पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान विषय पर संगोष्ठी और कवि दरबार, तथा नई दिल्ली में उर्दू में बाल साहित्य विषय पर पैनल डिस्कशन।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान ही ट्रस्ट के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के पुस्तकालय-सह-प्रलेखन केंद्र के स्वचलीकरण का भी उद्घाटन किया गया जो इसे विश्व के वृहत्तर पुस्तकालय नेटवर्क से जोड़ने में सहायता करेगा। नवंबर माह में ही बिहार के दरभंगा जिले में स्कूली बच्चों एवं शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने गोनू झा पर केंद्रित कहानियां लिखीं तथा मिथिला चित्रकला शैली में उनका चित्रांकन किया। इस कार्यशाला की चुनिंदा कृतियों को मासिक द्विभाषी *पाठक मंच बुलेटिन* के नवंबर अंक में ही प्रकाशित किया गया है।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त ट्रस्ट द्वारा देहरादून में 11-17 नवंबर 2008 को स्थानीय दून लाइब्रेरी रिसर्च सेंटर में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पुस्तक संस्कृति के प्रोत्साहन में आपका सहयोग मिलता रहे, ऐसी अपेक्षा है।

नुज़हत हसन

तक पहुंचना कठिन है। साहित्य का सीधा जुड़ाव समाज से होता है, अपनी रचनाओं के माध्यम से आम लोगों की बात करने, जनपक्षीय साहित्य लिखने के लिए सतत प्रयत्नशील हूं। कितना सफल हो सका, इसका आकलन पाठकों द्वारा ही हो सकता है।

प्रो. केदारनाथ सिंह ने कहा कि हिन्दी साहित्य का बड़ा बाजार बिहार है। एक महीने के अंदर तीन पुस्तक मेलों का आयोजन यहां के पाठकों के पुस्तक प्रेम को दर्शाता है। बिहार के पिछड़ने के विरुद्ध यह सबसे सच्ची टिप्पणी है। उन्होंने साहित्य की वर्तमान स्थिति की चर्चा करते हुए कहा कि आज के लेखक को यह नहीं मालूम कि जो वह लिख रहा है, उसका पाठक कौन है। पाठक और लेखक की दूरी आज बढ़ गई है। कवि गोष्ठियों की परंपरा घट रही है। गोष्ठियों के माध्यम से पाठक और श्रोता का सीधा जुड़ाव होता है, जो अब समाप्त हो रहा है। परिस्थिति यह आ गई है कि पाठक बढ़ रहे हैं, श्रोता समाप्त होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि धीमी गति से चलते हुए, कभी पाठकों के अंदर प्रभाव छोड़ती है। भोजपुरी क्षेत्र से आने के बावजूद भोजपुरी में नहीं लिख पाने की टीस भी उन्होंने पाठकों को बताई।

प्रो. केदारनाथ सिंह को तन्मयता से सुन रहे लेखक/पाठक

16 नवंबर 2008 को बिहार सरकार और जिला प्रशासन, पटना के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित 32वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला, बिहार में शिक्षा और संस्कृति के बदलाव को नई ऊर्जा दे आया। आठ नवंबर से प्रारंभ इस मेले में लाखों पुस्तक प्रेमियों ने अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार बड़ी संख्या में पुस्तकों की खरीद की। मेले में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति एवं पुस्तकों की बिक्री ने इस बात का प्रमाण दिया कि पाटलिपुत्र की इस धरती पर साहित्य अब भी जिंदा है। महापुरुषों की जीवनी, आत्मकथा, चर्चित व्यक्तियों की उपलब्धियां, संगीत, लोककला, धर्म, अध्यात्म, शासन, प्रशासन और प्रबंधन सहित कई विषयों में रुचि रखने वालों ने

बहुभाषी कवि गोष्ठी में श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग', श्री आलम खुर्शीद, श्रीमती सुस्मिता पाठक, श्रीमती ज्योत्स्ना चन्द्रम, प्रो. विद्यानन्द झा, प्रो. केदारनाथ सिंह, श्री शफी मशहदी, श्री अरुण कमल, श्री पाण्डेय कपिल, श्री मदन कश्यप, डॉ. जितेन्द्र वर्मा

बड़े मनोयोग से मेले का आनंद उठाया। प्रकाशकों ने भी पाठकों को संतुष्ट करने का हर संभव प्रयास किया। श्री अशोक वाजपेयी की टिप्पणी *गरीब बिहार अभी भी शैक्षणिक और साहित्यिक रूप से अमीर है* बिहार की एक नई तस्वीर प्रस्तुत करने में सफल रही।

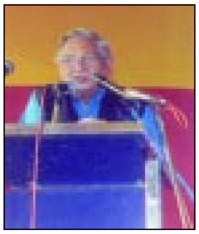

काव्य पाठ करते हुए प्रो. शहरयार

नौ दिनों तक राजधानी पटना में चले इस मेले में हर समय बड़ी संख्या में बच्चे, युवा और बुजुर्ग भरे रहे। प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं का उत्साहवर्द्धन लगातार होता रहा। उनका आत्मविश्वास इस कदर बढ़ा कि वे प्रतिवर्ष पटने में मेला आयोजित करने की वकालत करने लगे। बिहार के पाठकों ने इस मेले को एक उत्सव के रूप में स्वीकार किया।

मेले के अंतिम दिन बहुभाषी कवि गोष्ठी आयोजित हुई। प्रो. केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस गोष्ठी में हिन्दी के श्री आलोक धन्वा, श्री अरुण कमल, श्री मदन कश्यप; मैथिली की श्रीमती ज्योत्स्ना चन्द्रम, श्रीमती सुस्मिता पाठक, श्री विद्यानन्द झा, उर्दू के प्रो. शहरयार, श्री शफी मशहदी, श्री आलम खुर्शीद तथा भोजपुरी के श्री सूर्यदेव पाठक पराग, श्री पाण्डेय कपिल, डॉ. जितेन्द्र वर्मा ने कविता पाठ किया। गंगा तट पर संपन्न इस 32वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले की सफलता के बाद विद्यापति की पंक्ति *बड़ सुखसार पाओल तुम तीरे!* से आभार ज्ञापन हुआ।

—नवेन्दु कुमार झा

साहित्य और भूमंडलीय यथार्थ
रमेश उपाध्याय
पृ. 224 रु. 125.00
शब्दसंधान प्रकाशन
नई दिल्ली

प्रसिद्ध कथाकार श्री रमेश उपाध्याय के 33 निबंधों के इस संकलन में वर्त्तमान समाज की जीवन व्यवस्था के अनेक पहलुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है। *कोई विकल्प नहीं* जैसे पदबंध की चिंता से पुस्तक की भूमिका में लेखक अपनी बात शुरू करते हैं। भूमंडलीय यथार्थवाद से लेकर खेती, खनन, नैतिकता, राष्ट्रवाद... हर कुछ पर गंभीर चिंतन के साथ यह पुस्तक आज के समय में महत्वपूर्ण चिंतन मनन के लिए प्रेरित करती है।

बेहतर दुनिया की तलाश में
रमेश उपाध्याय
पृ. 408 रु. 250.00
शब्दसंधान प्रकाशन
नई दिल्ली

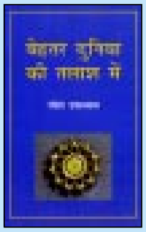

हिन्दी के सुपरिचित कथाकार श्री रमेश उपाध्याय द्वारा तैयार की गई यह पुस्तक बातचीत की कला का अनोखा रूप सामने लाती है। देश के सुप्रसिद्ध लेखकों, समाजसेवियों, चिंतकों के साथ की गई बातचीत का यह अनूठा संकलन है। इस बातचीत से यह स्पष्ट होता है कि वस्तुतः कोई साहित्यकार जब किसी अन्य साहित्यकार या ज्ञान की अन्य शाखाओं के विशेषज्ञों के साथ बातचीत करते हैं तो दोनों मिलकर समाज की विराट समस्या का समाधान सहचिंतक के रूप में खोजते हैं।

कभी जल कभी जाल
हेमंत कुकरेती
पृ. 124 रु. 110.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

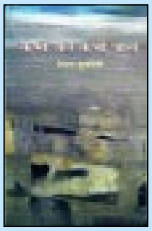

श्री हेमंत कुकरेती हिन्दी के महत्वपूर्ण युवा कवि हैं। उनकी 70 चुनी हुई कविताओं का यह संकलन वर्तमान समय और समाज में जीवनयापन कर रहे जन-साधारण की सुख-सुविधा, दुख-दुविधा, राग-विराग का महत्वपूर्ण रेखांकन है। कवि कविताओं का यह चौथा संकलन है। संवेदना, सोच और संरचना की दृष्टि से समकालीन हिन्दी कविता में यह संकलन महत्वपूर्ण है। एकांत मानवीय जिजीविषा के अपार विस्तार तक पहुंची ये कविताएं मुग्ध और चकित करती हैं।

गांधी और दलित—भारत जागरण
श्रीभगवान सिंह
पृ. 284 रु. 250.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

हिन्दी के महत्वपूर्ण समालोचक श्रीभगवान सिंह ने अपनी इस पुस्तक में गांधी, दलित और भारतीय जागरण को केंद्र में रखकर विभिन्न ज्वंलत विषयों पर चिंतन किया है। विषय से संबंधित रूढ़ हो चुकी परिभाषाओं और अवधारणाओं का पुनर्पाठ करते हुए उनमें निहित सार्थक मंतव्य को उन्होंने यहां रेखांकित किया है। व्यापक सामाजिक संदर्भों के साथ मौलिक गांधी साहित्य के विवेचन को आधार बनाकर लेखक ने इस पुस्तक में गांधी के विराट योगदान को आधुनिक विमर्शों के बीच ला खड़ा किया है।

ज़ीरो रोड
नासिरा शर्मा
पृ. 348 रु. 300.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

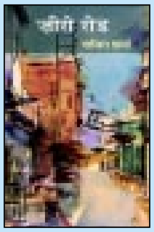

हिन्दी की सुपरिचित कथाकार नासिरा शर्मा का ताजा उपन्यास, जिसमें संसार के मानचित्र पर खड़े विभिन्न देश, भाषा, धर्म, रंग के लोग एक ही अनुभव से गुजर रहे हैं। सब के अंदर एक ही राग है जिसे पीड़ा कहा जा सकता है, इस उपन्यास में उसी पीड़ा को पकड़ने की कोशिश की गई है। इलाहाबाद के एक ठहरे और पिछड़े मुहल्ले 'चक' से लेकर दुबई जैसे अत्याधुनिक व्यापारिक नगर तक जाती हुई इस उपन्यास की कथा आज के दहशत भरे माहौल को रेखांकित करती है।

उग्र का परिशिष्ट
भवदेव पांडेय
पृ. 294 रु. 250.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

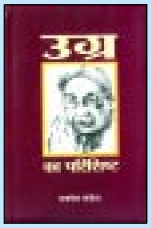

साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी में पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र' का नाम क्रांति पैदा कर देने वाले प्रखर व्यक्ति के रूप में लिया जाता है। समालोचकों ने तो उन्हें सामुद्रिक दृष्टि का लेखक कहा है। श्री भवदेव पांडेय द्वारा संकलित-संपादित दो खंडों में नियोजित इस पुस्तक के प्रथम खंड में 'उग्र' द्वारा लिखे गए संस्मरण संकलित हैं। जिनके केंद्र में साहित्य, संस्कृति और पत्रकारिता को विशेष ऊंचाई देने वाले पत्र 'मतवाला' है। दूसरे खंड में उनकी कुछ ऐसी रचनाएं हैं, जो अब तक अज्ञात या अल्पज्ञात रहीं। इनमें उनकी कहानियां, निबंध, लेख आदि शामिल हैं।

भारतवर्ष में पैंतालीस साल : मेरी हिन्दी-यात्रा
साइजी माकिनो
पृ. 128 रु. 110.00
भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

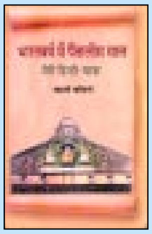

भारत की समृद्ध संस्कृति और परंपरा को जानने के लिए अनेक विदेशी पर्यटक भारत आते रहे हैं। साइजी माकिनो उन प्रवासियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कारों को अपनाया, बल्कि जापानी जीवन पद्धति एवं विचारों से भारतीयों को परिचय कराया। प्रसिद्ध चिंतक साइजी माकिनो जीविका की तलाश में भारत आए और अपने जीवन के पैंतालीस वर्ष यहीं व्यतीत किए। यह पुस्तक भारत पहुंचने के पूर्व से ही शुरू हुई उनकी रोमांचक जीवनयात्रा एवं भारत की अनेक विभूतियों के संपर्क में आकर प्राप्त अनुभवों का जीवंत चित्र है।

फ्रिज में औरत
मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी
पृ.136 रु. 120.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

चर्चित कथाकार मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी की ग्यारह कहानियों का यह संकलन बदले हुए समय की भाषा, आधुनिकता, संवेदनशीलता और अनुभवों के कोलाज से निर्मित है। वास्तविकता और फैंटेसी के प्रयोग से कुछ-कुछ जादुई यथार्थवाद की तर्ज पर भी ज़ौक़ी कभी-कभी नई दुनिया के लैंडस्केप सामने रखते हैं। जीवन की विवशताओं के साथ-साथ पारदर्शी विश्वसनीयता बनाए रखने में ये कहानियां सफल दिखती हैं।

दाह
केशुभाई देसाई
पृ. 144 रु. 120.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

गुजराती के प्रसिद्ध कथाकार केशुभाई देसाई के

प्रसिद्ध उपन्यास 'होलाष्टक' का यह हिन्दी अनुवाद मानव जीवन में धधकती ज्वालाओं के दाह का अनुभव कराता है। घने जंगलों के बीच बसे गांव के सामंती परिवेश में फंसे अभिशप्त परिवार की व्यथा-कथा यहां प्रभावशाली ढंग से चित्रित हुई है। मुहावरेदार भाषा शैली और रोचक विषय के कारण इस पुस्तक का प्रभाव सार्वजनिक जीवन की भावना और अंतर्वेदना की तरह प्रस्तुत होता है।

इस जंगल में
दामोदर खड़से
पृ. 144 रु. 120.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

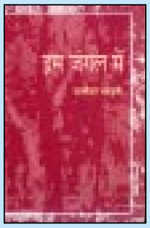

चर्चित कथाकार श्री दामोदर खड़से की अठारह कहानियों का यह संग्रह व्यक्ति और समाज की गहरी संवेदनाओं का प्रतिबिंब है। सामाजिक विसंगतियों से उपजी मनुष्य की विडंबनाओं और त्रासदियों का सार्थक चित्रण इन कहानियों में है। कथ्य की दृष्टि से ये कहानियां अपनी समयगत सचाइयों का बयान करती हैं, और भाषा तथा शैली के सहयोग से अभिव्यक्ति को गतिमान बनाती है।

ओ इजा
शम्भुदत्त सती
पृ. 144 रु. 130.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

युवा कवि, कथाकार शम्भुदत्त सती का यह पहला उपन्यास पर्वतांचल के ग्रामीण परिवेश एवं लोक-संस्कृतियों, लोक-परंपराओं को सूक्ष्मता से रेखांकित करता है। ये वैसे गांव हैं जहां आज भी जीवन जीने की न्यूनतम सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। परिस्थितियां पीड़ा, क्षोभ और अतृप्ति के कब्जे मे हैं। प्रगति के नाम पर कोई किरण तक वहां नहीं पहुंची। श्रमजीवियों का बदस्तूर शोषण जारी है। इन दृश्यों का चित्र देख इस उपन्यास के पाठक अचानक *ओ इजा* (ओ मां) कहने को मजबूर हो जाते हैं।

वसीयनामा
पं. सूर्यनारायण व्यास
पृ. 206 रु. 170.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

राजशेखर व्यास द्वारा संपादित, पं. सूर्यनारायण व्यास के चुने हुए 48 व्यंग्य आलेखों का यह संकलन विषयों की विविधता और नवीन दृष्टि से भरा हुआ है। गंभीर सांस्कृतिक छवि के रचनाकार व्यास जी के सरल हास्य व्यंग्य लेख समालोचकों के समक्ष अपने समय में समीक्षा की कसौटी पर खरे उतरे हैं। चुहलभारी भाषा और नवीन कथन दृष्टि के कारण अपने आलेखों में पर्याप्त रोचकता भरने और प्रभाव जमाने में सदा वे सफल रहे हैं।

दाराशुकोह
मेवाराम
पृ. 868 रु. 600.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री मेवाराम ने दाराशुकोह की जीवनी को केंद्रित कर इस उपन्यास की कथा बहुत ही नए तरीके से प्रस्तुत की है। भारतीय इतिहास में दाराशुकोह की विद्वता, सदाशयता एवं मानवीय अभिधारणाओं से आज के समय के सभी पढ़े लिखे लोग परिचित हैं। बावजूद इसके अब तक उनके जीवन का बहुत कुछ अनछुआ रह गया है, जिसे यह उपन्यास सूक्ष्मता से रेखांकित करता है। कथानक ऐतिहासिक रहने के बावजूद उपन्यास की मूल शक्ति उसका संवाद और वातावरण है। वर्तमान संदर्भों में जिस तरह धर्म पर कठमुल्लापन हावी है और समाज में प्रश्नाकुलता की बौछार लगी है, यह उपन्यास उन सबका हल तलाशने की सफल कोशिश करता है।

जन विजय
अजित पुष्कल
पृ. 52 रु. 60.00
भारतीय ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

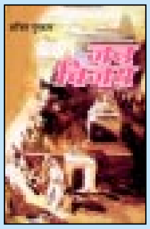

पूर्णकालिक रंगकर्मी श्री अजित पुष्कल द्वारा लिखित यह पुस्तक इतिहास शोध, विचार, संवेदना और भावसत्ता का समकालीन संस्करण है। अतीत को वर्तमान तक लाने का रचनात्मक उपक्रम यहां दिखता है। वैशाली में व्याप्त समतामूलक समाज और गणतंत्र की व्यवस्था पर चतुर्दिक फैली किंवदतियों को यह नाटक विश्वसनीय ढंग से तोड़ती है और भावकों को सचाई से परिचय कराता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
और
उसकी गतिविधियों
तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी
के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

प्राप्त पुस्तकें

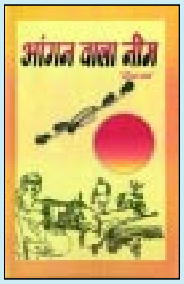

आंगन वाला नीम
निरुपम
पृ. 72 रु. 60.00
मानव कल्याण अनुसंधान एवं विकास न्याय, भोपाल

जंगल से गुजरते हुए (कविता संग्रह)
निरुपम
पृ. 58 रु. 110.00
विजन पब्लिकेशन, भोपाल

ठीक पिछले साल की तरह
निरुपम
पृ. 71 रु. 100.00
अभिनव ग्राफिक्स एण्ड प्रिन्टस, भोपाल

विभाजन की त्रासदी भारतीय कथादृष्टि
नरेन्द्र मोहन
पृ. 114 रु. 100.00
भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2006-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2006-08
Mailing date 15/16

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें

हिमांशु जोशी : संकलित कहानियां

पृ. 188 रु. 65.00

हिमांशु जोशी : संकलित कहानियां पुस्तक में कथाकार द्वारा चुनी गई तेइस कहानियां संकलित हैं। किसी बड़े रचनाकार के पांच दशकों के रचनाकर्म की पूरी पर्यवस्थिति का अनुमान एक छोटे संकलन में असंभव है, पर संकेत रूप में यहां पूरे हिमांशु जोशी (1935) को देखा जा सकता है। हर आंदोलन के पार्श्व में वैचारिक धरातल की अनिवार्यता स्वीकार करने वाले इस कथाकार ने समांतर कहानी आंदोलन से अपने को इस धारणा से जोड़ा कि वे समाज की दौड़ में पीछे रह गए लोगों से जुड़ना चाहते थे। आगे चलकर समांतर आंदोलन भले सिमट गया, पर हिमांशु जोशी सदा उन लोगों से जुड़े रहे, और उस जुड़ाव के पाथेय से अपनी संवेदना और रचना-यात्रा को विस्तार देते रहे। कल्पना और यथार्थ, फेंटेसी और वास्तविकता की उलझी हुई परिस्थितियों में स्वातंत्र्योत्तरकालीन भारतीय नागरिक का जीवन जिस प्रपंच, संशय और आतंक में बीतता रहा--उनके विस्मयकारी रहस्य इन कहानियों में पूरी तरह विश्लेषित हैं। कहीं बालमन की जिज्ञासाएं, कहीं स्मृतियों के तार, कहीं पारिवारिक जीवन का उतार चढ़ाव तो कहीं वंचितों का दुख-दर्द... वस्तुतः उनके यहां कहीं कहानी जिंदगी लगती है, तो कहीं जिंदगी कहानी। कई पुरस्कारों से सम्मानित रचनाकार हिमांशु जोशी की कुछ अन्य महत्वपूर्ण कृतियां हैं : अंततः, मनुष्यचिह्न, गंधर्वगाथा (कहानी संग्रह), सुराज, समयसाक्षी (उपन्यास) आदि। उनकी कई रचनाएं राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनूदित, प्रशंसित हैं।

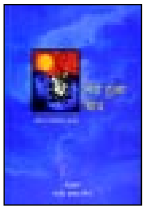

मरा हुआ चांद

उपेंद्र किशोर दास

पृ. 92 रु. 50.00

ओड़िया के प्रसिद्ध उपन्यास मरा हुआ चांद का पहला प्रकाशन धारावाहिक रूप से वारुणी पत्रिका में सन् 1928 में हुआ, वह भारतीय गद्य लेखन में नवीन दृष्टि के प्रवेश का दौर था। विषय और शिल्प--दोनों ही दृष्टियों से भारतीय लेखक अपनी-अपनी भाषा के साहित्य को ताजा-तरीन बनाने में तल्लीन थे। सूक्ष्म मनोविश्लेषण, उद्दाम भावावेग और प्रगतिकामी नैतिकता से भरी हुई लेखकीय दृष्टि करीब-करीब सभी भाषाओं में सक्रिय थी। यह उपन्यास समकालीन सृजन के उसी रूप का उदाहरण है। निश्छल, निष्काम प्रेम और थोपे हुए दांपत्य की खींचा-तानी के बीच स्त्री-जीवन की विडंबना को उपन्यासकार ने सूक्ष्म मनोविश्लेषण से जो उत्कर्ष दिया है, वह अनूठा है। लालच और दुष्टता की स्याह चादर ओढ़कर मर्यादा की अमर्यादित दुहाई देने वाली सामाजिक-व्यवस्था को यहां बेरहमी से नंगा किया गया है। सहज वर्णन प्रक्रिया के कारण इसकी पठनीयता और रोचकता उत्कर्ष तक पहुंची है। उपन्यासकार उपेंद्र किशोर दास (1901-1972) ओड़िया उपन्यास लेखन के उन्नायक रचनाकारों में से हैं। चित्रांकन और साहित्य सृजन के प्रति बचपन से ही उनका लगाव था। उन्होंने बाल साहित्य, आलोचना और अनुवाद के क्षेत्र में भी काफी काम किया। उनकी प्रमुख कृतियां हैं : मोलाजोन्हो, अलीबाबा, कांउरी देशोरे गउरी आदि। कई दर्जन पुस्तकों के अनुवादक और अनुवाद हेतु कई पुरस्कारों से सम्मानित राजेंद्र प्रसाद मिश्र आज ओड़िया-हिन्दी भाषा-साहित्य के मानक-सेतु के रूप में जाने जाते हैं। अनुवाद में मूल का रस भरना उनकी अनुवाद-कला की विलक्षणता है।

अमरकान्त : संकलित कहानियां

पृ. 240 रु. 95.00

साहित्य अकादमी सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित कथाकार अमरकान्त (1925) नई कहानी आंदोलन के दौर के अग्रणी कथाकार हैं, वे समकालीन जीवन में निम्न और निम्नमध्यवर्गीय चरित्रों, उनकी स्थितियों के द्वंद्व के चितेरे हैं। उनकी कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर भारत में व्याप्त मोहभंग, निराशा के प्रति उद्वेलन और उद्विग्नता दिखती है। व्यंग्य की धार और शोषितों, दलितों की निरीह चुलबुलाहट उनके यहां बड़े आक्रामक प्रभाव के साथ मौजूद है। मनुष्य के संघर्षशील आचरण पर आस्था रखने वाले इस कथाकार की बाइस कहानियों का संकलन अमरकान्त : संकलित कहानियां स्वातंत्र्योत्तरकालीन भारतीय नागरिक के जीवनयापन का विश्वसनीय दस्तावेज और कथाकार की जीवन-दृष्टि का उदाहरण प्रस्तुत करता है। संयुक्त परिवार के बिखराव, मनुष्य के एकाकीपन से लेकर आम नागरिक के टूटते-बिखरते सपनों, विज्ञान और विकास की उपलब्धियों से वंचित और विकृतियों से प्रभावित-प्रताड़ित लोगों के मनोवेगों, बाजारवाद और भूमंडलीकरण के जबड़े में बिलबिलाते लोगों की व्यथाओं का बिंब इन कहानियों में पाठकों को उद्वेलित करता है। यह उद्वेलन शुरू से ही समाज को नई दिशा देता आ रहा है। कथन भंगिमा, भाषा शिल्प और विषय-वस्तु के साथ रचनात्मक बर्ताव के लिए अमरकान्त अपनी पीढ़ी में भी अलग छवि रखते हैं। उनकी प्रमुख कृतियां हैं : सूखा पत्ता, काले-उजले दिन, बीच की दीवार, इन्हीं हथियारों से (उपन्यास), जिंदगी और जोंक, देश के लोग, कुहासा, तूफान (कहानी संग्रह), वानर सेवा, खूंटा में दाल है, झगरू लाल का फैसला (बाल साहित्य) आदि।

काशीनाथ सिंह : संकलित कहानियां

पृ. 216 रु. 90.00

काशीनाथ सिंह (1937) हिन्दी के साठोत्तरी दौर के ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने अपने समय की प्रचलित आधुनिकता की आंधी से विमुख, सर्वथा भिन्न प्रकृति की कहानियां लिखीं। उनकी कहानियों में परिवर्तनकामी नए भारत की जड़ों से उगती हुई उस आधुनिकता की अभिव्यक्ति है, जिसकी शाखाएं एक ओर प्रेमचंद को छू रही हैं, तो दूसरी ओर आधुनिक कहानी के जनक एंटोन चेखव को। उनका आसपास ही उनकी कहानी का मुख्य विषय होता है। उनकी कहानियों का 'आम आदमी' सच्चा मजदूर, मेहनतकश, बोझ ढोने वाला आदमी होता है जिसे अपने कामगार होने पर नाज होता है और अपने स्वाभिमान के लिए वह सजग रहता है। वे ठेठ बनारसी ठाठ के कहानीकार हैं। कहानियों का 'भदेसपन' ही उन्हें अधिकांश कहानीकारों से सर्वथा पृथक करता है। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में, बनारस का जनपद अपने समस्त जीवंत अस्तित्व के साथ उपस्थित रहता है। विविधता के बावजूद उनकी कहानियों में कहीं अनावश्यक विस्तार नहीं होता। काशीनाथ सिंह : संकलित कहानियां शीर्षक इस पुस्तक में इन तमाम विविधताओं का समावेश है।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक
देवशंकर नवीन

कार्यकारी संपादक
कमाल अहमद

उत्पादन सहयोग
प्रवीण कुमार कपिल

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज़्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेज, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।